ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 155-156

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

बौद्ध दर्शन एवं समकालीन नास्तिक दर्शन

डॉ0 अमृत आनन्द सिनहा प्राचीन इतिहास, बॉसड़ीह, बलिया (उ0प्र0) भारत

Received-24.11.2023, Revised-30.11.2023, Accepted-04.12.2023 E-mail: mritanandballia@gmail.com

सारांशः नास्तिक वेद निन्दक अर्थात् वेद की निंदा करने वाला व्यक्ति नास्तिक होता है। अतः इस सिद्धांत के आधार पर भारतीय दर्शन में वेदों को प्रमाण स्वरूप न मानने वाले दर्शन तीन हुए हैं। चार्वाक दर्शन एक भौतिकवादी एक प्रवृत्तिमार्गी दर्शन है तथा बौद्ध एवं जैन दर्शन आध्यात्मवादी एवं निवृत्तिमार्गी दर्शन है।

कुंजीभूत शब्द– नास्तिक वेद निन्दक, भारतीय दर्शन, प्रमाण, चार्वाक दर्शन,भौतिकवादी, प्रवृत्तिमार्गी दर्शन, आध्यात्मवादी ।

बौद्ध दर्शन– बौद्ध दर्शन जिस सामाजिक व्यवस्था व परिवेश में विकसित हुआ, उसकी पूर्व पीठिका उसके धार्मिक चिन्तन व प्रचलित धर्म परम्परा के विरोध में बन गई थी।उस समय कर्म काण्ड व यज्ञाचारित ब्राह्मण धर्म प्रचलित था, जिसमें अनेक कुप्रवृत्तियॉ व विकृत्तियॉ उत्पन्न हो गई थी तथा यज्ञों में पशु हिंसा का प्रयोग सर्वमान्य था। यह व्यवस्था जनसमान्य में असन्तोष का कारण बन रही थी तथा एक सामाजिक परिवर्तन की अनिवार्यता अनुभव की जा रही थी। इसी सामाजिक परिवर्तन या यों कहे कि सामाजिक समझौते के रूप में बुद्ध धर्म – दर्शन अस्तित्व में आया, जिसके प्रणेता महात्मा बुद्ध हुये। उनके समय तक प्राचीन अविस्मरणीय वैदिक धर्म के ऊपर समकालीन धर्म की संकीर्णताओं का बोलबाला हो गया था। अतः बुद्ध ने जिस नई विचारधारा को जन्म दिया – वह एक प्रकार से वैदिक धर्म का सुसंस्कारित बन गया था।

इसे हिंदू धर्म का अत्यंत परिष्कृत और संग्रहित रूप दिया गया, जिसके कारण सर्वहित की कामना का प्रसार बढ़ा। इस नए धर्म के अनुसार प्रचलित धार्मिक परम्पराओं की बहुत सी बुराईयां दूर हुई, वहीं इसकी प्राचीनता के प्रति जनसामान्य की रुचि बढ़ी और उसकी लोकप्रियता के कारण इसे विस्तार मिला। कारण यह है कि स्वस्थ आलोचना और समय की अनिवार्यता के फल स्वरुप हुआ विरोध बहुत से नई उद्भावनाओं को जन्म देता है और विकास के मार्ग खोलता है।

इसके अतिरिक्त विशिष्ट गुना व संस्कारों से उत्तर संपन्न मेधा वाले महापुरुष परंपरा से अलग नए स्थापनाओं के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। बौद्ध धर्म व दर्शन के प्रति पक महात्मा बुद्ध ऐसे ही व्यक्तित्व को लेकर आए थे। उन्होंने धर्म के क्षेत्र में विशेषता बौद्ध संग्रहित समाज में सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय के लिए निर्माण का आह्वान किया, उसे व्यवहार में लाने के लिए स्वयं को सन्नद्ध किया। शिक्षा, आचार – विचार और समत्व बुद्धि का संदेश दिया।

सिद्धार्थ राजा शुद्धोधन के पुत्र राजमहल कर राजी ढंग से उन्हें एकपुत्र राहुल की प्राप्ति होगी परन्तु उनके जन्म के समय से ही निरिक्षा हो गया था कि ज्ञानी पुरुष है कहकशम नहीं है। इन्होंने मानवता के कल्याण के लिए जन्म लिया है। (इनकी बौद्ध की जीवनियों आदि में जन्म के पूर्व से लेकर पाक का वर्णन मिलता है। जब अनेक समाचारिक घटनाएं हुई थी व ज्योतिषी भविष्यवाणी की थी।

सिद्धार्थ को बुद्धत्व प्राप्ति होने तक का क्रम– सिद्धार्थ राजा शुद्धोधन के पुत्र राजमहल में रहकर राजसी ढंग से पले थे, उनका विवाह कोलिय प्रजातंत्र की राजकुमारी व यशोधरा से हुआ था। उन्हें एक पुत्र राहुल की प्राप्ति हो गई थी, परंतु उनके जन्म के समय से ही निश्चित हो गया था कि ये महज्ञानी पुरुष है। इनका घर में रहने का विधान नहीं है। इन्होंने मानवता के कल्याण के लिए जन्म लिया है। इनकी जीवनियों आदि में जन्म के पूर्व से लेकर पश्चात तक का वर्णन मिलता है। जब अनेक चमत्कारिक घटनाएं हुई थी व ज्योतिषयों ने भविष्यवाणीयॉ की थी।

अस्तु, युवावस्था तक आते–आते उनके मन में वैराग्य भावना का उदय होने लगा, जो उनके पूर्व संस्कारों का फल था। उसी समय उन्होंने एक रोगी, एक वृद्ध, एक मृतक व एक संन्यासी को देखा और मन में ये विचार जन्म लेने लगा कि यह संसार दुःखमय है, मुझे इन दुखों का कारण खोजना होगा तथा इनका प्रतिकार करना होगा। इसके लिए गृहवास छोड़कर वन जाकर तपस्यारत होना होगा। विचार दृढ़ होते ही वे एक रात पत्नी – पुत्र को सोता छोड़कर अपने सारथी छन्दक के साथ अपने घोड़ें कन्धक पर चढ़ध्कर चले गए और छन्दक को अपना उद्देश्य बता कर वापस कर दिया और संयासी होने के मार्ग पर चल दिए।

प्रथम राजगीर फिर उरुवेला पहुंचकर एक वट वृक्ष के नीचे होकर तपस्या की पर मन को शांति न मिली। उन्हें निराहार रहते 48 दिन हो, शरीर कुश काय हो गया, परन्तु शान्त न हुआ। एक दिन सायं काल बोधिवृक्ष के नीचे पीपल वृक्ष की छाया में यह प्रतिज्ञा करके आसनस्थ हो गए कि अब किसी भी अवस्था में बिना ज्ञान प्राप्त किये उठना नहीं है। इस दशा में सात दिन व सात रात वे एकासन में बैठ चिंतनरत रहे। अंत में सातवीं रात में उन्हें प्रथम याम में संसार की उत्पत्ति, स्थिति व लय का ज्ञान प्राप्त हुआ। उन्हें यह भी ज्ञात हुआ की अज्ञान, वेदना, तृष्णा, उपादान, जन्म, जरा, शोक, दुख आदि का क्या रहस्य है।

वहां से उठकर पुनः वट वृक्ष के नीचे ध्यानरत हुए एक सप्ताह तक ऊपर की बातों पर विचार करते रहे तथा उस समाधि से उठकर आंख खोलते हुए उन्हें पूर्ण 'बुद्धत्व' प्राप्त हो गया। उन्होंने करुणा भरी दृष्टि से प्राणियों की ओर देखा। उस समय उनकी आयु 36 वर्ष (588 ईसवी पूर्व) थी। बोधगया से वाराणसी आकर उन्होंने पांच भिक्षुओं को प्रथम उपदेश दिया।

बौद्ध साहित्य की समस्त ग्रंथ सामग्री पाली एवं संस्कृति दोनों भाषाओं में लिखी गई है। धर्म विषय ग्रंथ पाली में वह विशेष सामग्री संस्कृत में लिखी गई है। स्वयं उन्होंने कुछ नहीं लिखा। उनके शिष्य परंपरा के द्वारा यह सामग्री संकलित करके त्रिपिटक में लिखी गई है। त्रिपिटक अर्थात तीन पिटारियॉ –

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

1. विनय पिटक – इसमें अनुशासन संबंधित शिक्षाएं संग्रहित है।
2. सुतनिकाय – यह उपदेशात्मक पिटक है। इसमें उनके उपदेश लिखे गए हैं।
3. अभिधम्म पिटक – इसमें अध्याय तथा नीति में मनोविज्ञान की बातें हैं।

इन त्रिपिटकों को अनुश्रुति कहा गया अर्थात जो सुना गया व रक्षित कर लिया गया। सम्राट अशोक ने मगध में तिसरी बौद्ध संगीति में इनका संकल्प लिया, समय तीन वर्ष ई०पू० था। लगभग 34 ग्रन्थों का यह संग्रह है।

वैभाषिक – इस मत के अनुयायियों का मानना है कि संसार की सभी वस्तुएं असत्य हैं, जो भी वस्तु संसार में है, वह अनंत सत्तात्मक है। अतः यह सत्य है, क्योंकि उसके द्वारा प्राणियों का जीवन निर्वाह हो रहा है, परंतु हर वस्तु का ज्ञान तभी होगा, जब वह प्रत्यक्ष दिखाई दे। उदाहरण के लिए यह सर्वमान्य है कि पर्वत पर धुआं है तो आग अवश्य होगी। परंतु यदि किसी ने आग व धुआ दोनों एक साथ ना देखे हो तो वह कैसे विश्वास करेगा। अतः सिद्ध होता है कि बिना प्रत्यक्ष देखें अनुमान से परंतु का यथार्थ ज्ञान नहीं होगा।

सोतांत्रिक – यह मत वाह्यार्थानुमेववादी है, अर्थात वाह्य जगत में पदार्थों का पूर्ण अस्तित्व होता है तथा हम उन्हें प्रत्यक्ष ज्ञान के आधार पर ग्रहण करते हैं। यह एक प्रकार से सर्वास्तिवाद ही कालांतर में यथार्थ रूप बना कर मान्य हो गया है। बुद्ध के थेरावाद में संसार के सभी पदार्थों को क्षणिक माना गया है।

योगाचार – यह विज्ञानवादी मत है। इसके अनुसार प्रतिबिंब के द्वारा बिम्ब का ज्ञान जो अनुमान पर आधारित है, असत्य है। चित की एकमात्र सत्ता है। उसी के आभास को जगत कहा गया है। इसके दो भेद हैं – स्मरणात्मक व अनुभवात्मक। इस स्मरणात्मक ज्ञान इसी जन्म में हुए हमारे प्रत्यक्ष अनुभवों की वासना पर निर्भर करता है, जबकि अनुभवात्मक ज्ञान अनादि काल से चले आ रहे संस्कारों पर निर्भर करता है। इसके अनुसार शरीर तथा अन्य सभी पदार्थ हमारे मन के भीतर विद्यमान है। जिस प्रकार स्वप्न वह मति भ्रम के कारण वस्तुओं को वह समझ लिया जाता है। यह वास्तव में वैसा नहीं है। दो चंद्रमा दिखने हमारा दृष्टि दोष है। इस प्रकार विज्ञानवादी विभिन्न विज्ञानों का आलय होने के कारण आलय विज्ञान कहलाता है। वह नित्य और अपरिवर्तन शील नहीं है, वरन् योगाभ्यास के द्वारा निर्वाण प्राप्त किया जा सकता है। यहाँ जिज्ञासा को योग वह सदाचार को आचार कहा जाता है।

माध्यमिक संप्रदाय – यह शून्यवादी सम्प्रदाय है। यह महायान का जो अति प्राचीन सर्वमान्य मत है, इसके जन्मदाता तथागत बुद्ध ही रहे हैं। इस संप्रदाय का प्रथम ग्रंथ 'प्रज्ञा पारमिता सूत्र' है। इस पर नागार्जुन ने माध्यमिक कारिका लिखकर अपने विलक्षण मेधा का परिचय दिया है। यह शून्यवाद दार्शनिक जगत का अत्यन्त प्रभावशाली व सूक्ष्म मत माना जाता है।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि भगवान बुद्ध ने जिस लोकोपकारी धर्म को जन्म दिया था, उनके मूल में एक सामाजिक समझौता था। उन्होंने कभी भी दलगत विचारधाराओं का समर्थन नहीं किया है। बुद्ध का स्वयं का दर्शन बहुत सी विशेषताएं लिए हुए हैं। यह बहुत ही सरल, सुगम एवं आचरणीय रहा है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. बर्लिंगेम, बुद्धिस्ट लीजेन्ड्स, 2, 29, 343.
2. जातक, सम्पादक – फाउल्सबोल, 1877–97.
3. जातक, पूर्वोक्त, 4.144, 277.
4. संयुक्त निकाय,भाग– 2, पृष्ठ 830.
5. सुत्रनिपात, कंसिभारद्वाज सुत्र, पृष्ठ 15.
6. दिव्यावदान 131/25–26.

*****